ॐ

अमृतवाणी

(व्याख्या)

रचयिता
श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

व्याख्याकर्ता डॉ. विश्वामित्र

प्रकाशक

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट

श्रीरामशरणम्, 8 ए, रिंग रोड,
लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–110024

WEB.SITE- WWW.SHREERAMSHARNAM.ORG
E-MAIL: SHREERAMSHARNAM@HOTMAIL.COM

सम्वत् 2061 सन् 2004
सर्वाधिकार सुरक्षित न. एल– 18687/99

पहला संस्करण सन् 1996 प्रतियां 10,000
दूसरा से पांचवें पुनर्मुद्रण तक प्रतियां 96,000
छटा पुनर्मुद्रण प्रतियां 20,000
योग 1,26,000

मूल्य 5/– रूपये

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स मायापुरी
नई दिल्ली-110 064 दूरभाष 28116494

परम सन्त श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

दिव्य मूर्ति *स्वामी जी का जन्म चैत्र पूर्णिमा, 26 अप्रैल सन् 1861 (विक्रमी सम्वत 1918) को शुक्रवार के दिन एक ब्राह्मण परिवार में 'जग्गू का मोरा' नामक गांव (पश्चिमी पंजाब – अब पाकिस्तान) में हुआ। बाल्यावस्था में माता–पिता का देहान्त हो जाने के कारण इनका पालन पोषण लगभग छः वर्ष तक नानी द्वारा 'अंकरा' नामक गांव (जम्मू कश्मीर राज्य) में हुआ। दस वर्ष की आयु में नानी का शरीर भी शान्त हो गया। जैन साधुओं के उपदेशों से प्रभावित होकर 17 वर्ष की आयु में घर त्याग, उनके साथ रहना आरम्भ किया और उन्नीसवें वर्ष में जैन मुनि बन गये। उसी बीच आपने संस्कृत का अध्ययन करके जैन ग्रन्थ पढ़ लिए। ''आध्यात्मिक चिकित्सा'' नामक लघु ग्रन्थ पढ़ने के उपरान्त, तदनुकूल अभ्यास करने से स्वामी जी का विश्वास परमेश्वर की सर्वज्ञता, सर्वत्र विद्यमानता, सर्वशक्तिमत्ता के प्रति बढ़ता गया। उनके सच्चिदानन्द स्वरूप के प्रति आपकी श्रद्धा सुदृढ़ हो गई। जैन यतियों से 30 वर्ष की आयु में प्रेमपूर्वक पूर्ण कृतज्ञता के साथ विदा लेकर आर्य समाज से सम्बन्धित हो गये। मलेरकोटला (पंजाब) में आर्य समाज मण्डप में 28 दिसम्बर 1891 में संन्यास–दीक्षा ग्रहण की। तद्नन्तर जालन्धर नगर में रह कर आप ने शास्त्रों का खूब विधिवत् अध्ययन किया और उपनिषदों, महाभारत, रामायण एवं वैदिक प्रसंगों पर कथा करनी आरम्भ की। महाराज जी की ऊँची एवं मधुर वाणी बिना लाऊड स्पीकर के हजारों लोग सुना करते। इसी बीच उन्होंने दयानन्द प्रकाश, सत्य–उपदेश माला, ओंकार उपासना, आर्य सामाजिक धर्म, सन्ध्यायोग, ईश्वर–दर्शन और दयानन्द–वचनामृत नामक पुस्तकों की रचना भी की। कुछ एक पुस्तकें अभी भी वैदिक जगत में सम्माननीय हैं। वैदिक प्रचार लगभग 25 वर्ष तक करते रहे।*

सन् 1925 में ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव के समय एकान्तवास करने की आन्तरिक प्रेरणा हुई और वह हिमाचल प्रदेश के डलहौज़ी नामक निर्जन स्थान पर चले गये। कुछ काल तक अनवरत साधना की और दृढ़ निश्चय किया कि ''जब तक परम प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक मैं यहां एकाग्रचित्त बैठा रहूंगा''। लगभग एक माह बाद, 7 जुलाई 1925, व्यास पूर्णिमा के दिन जब वह प्रार्थना में निमग्न थे तो उन्हें ''राम'' शब्द अति सुन्दर एवम् आकर्षक, मधुर स्वर में सुनाई दिया। तदुपरान्त आदेशात्मक शब्द आये : ''राम भज, राम भज – राम राम''। परमात्मा के तेजोमय स्वरूप के दर्शन हुए। परमात्मा श्री ''राम'' ही को परम गुरु स्वीकारा। सन् 1928 में राम–नाम दान (दीक्षा) का सेवा कार्य आरम्भ किया। अनेक ग्रन्थ जैसे भक्ति प्रकाश, वाल्मीकीय रामायणसार, श्री मद्भगवद्गीता, एकादशोपनिषद् संग्रह, प्रार्थना और उसका प्रभाव, उपासक का आन्तरिक जीवन, भक्ति और भक्त के लक्षण, स्थितप्रज्ञ के लक्षण, भजन एवं ध्वनि संग्रह तथा अमृतवाणी की रचना की। अमृतवाणी आपका अवतरित लघु ग्रन्थ है। उनके प्रवचनों का संकलन प्रवचन पीयूष नामक पुस्तक में है। देश विदेश में राम नाम प्राप्त कर, इस पतित पावन, मधुर, सर्वशक्तिमय नाम की आराधना करके साधक शान्ति लाभ कर रहे हैं।

卐 ॐ 卐

अमृतवाणी

ऐसे वचन–शब्द–समूह, जो अमृत हैं, ऐसे बोल, जो अमरत्व प्रदान करते हैं - जो अमर बना देते हैं, ऐसी वाणी जिसके बोलने–गाने से व्यक्ति अमर हो जाता है, वह अमृतवाणी ।

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

सर्व शक्तियों से सम्पन्न *परमात्मा श्री* राम को नमस्कार।

परमात्मा श्री राम जो सब शक्तियों से युक्त हैं अर्थात् जिन में समूची शक्तियाँ विद्यमान हैं, जो समस्त शक्तियों के स्वामी हैं, उन्हें नमस्कार।

सर्व शक्तिमान् परमात्मा के आगे मैं झुकता हूं अर्थात् मैं उनकी शरण में जाता हूं, मैं उनके समक्ष समर्पित हूं।

परमात्मा : सर्वोत्कष्ट आत्मा (The Supreme Soul)

श्री : श्री मान्

श्री : शोभा, यश, ऐश्वर्य, विजय, सौभाग्य, वैभव, महिमा, तेज, लक्ष्मी।

राम–कृपा अवतरण
(Descent of Ram's Grace)

: श्री राम–कृपा का नीचे उतरना।

: भक्त पर श्री राम-कृपा का होना।

: प्रभु राम की ओर से कृपा का आना।

: श्री राम-कृपा का उदय होना।
कृपा : अनुग्रह, करुणा, दया।

परम–कृपा सुरूप है, परम – प्रभु श्री राम ।
जन पावन परमात्मा, परम पुरुष सुखधाम //1//

सर्वोत्कृष्ट प्रभु श्री राम का सुन्दर रूप (Form) है सर्वोच्च कृपा अर्थात् वे श्रेष्ठतम कृपा रूप हैं, उनका रूप है–कृपा। वे कृपा-रूप परमात्मा, व्यक्ति को पवित्र करने वाले हैं, पुरुषोत्तम हैं, सर्वोपरि–सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम पुरुष हैं तथा सुख के निवास-स्थान (Abode) हैं।

परम : Supreme

सुखदा है शुभा – कृपा, शक्ति शान्ति स्वरूप ।
है ज्ञान आनन्दमयी, राम – कृपा अनूप //2//

प्रभु राम का *रूप* है– परम कृपा–(Supreme Grace) किन्तु, उनका *स्वरूप* आन्तरिक-स्वभाव) है सुख देने वाला, मंगल करने वाला–हर्ष–हित–अच्छाई–सौभाग्य प्रदान करने वाला अर्थात् उनकी कृपा, जो अतुल्य है, वह ज्ञान एवं आनन्द का भण्डार है, शक्ति-सामर्थ्य, शान्ति-आनन्द का अक्षय स्रोत है, राम-कृपा सुख देने वाली है, सब का मंगल करने वाली है, शक्ति व शांति उसके निज रूप हैं, वह आनंद और ज्ञान से परिपूर्ण है अतः अनुपम है।

रूप–स्वरूप : आभूषण का रूप है–हार, कंगन, कुण्डल, अंगूठी परन्तु उसका स्वरूप है–स्वर्ण। मिश्री चपटी है, कूजा है, दानेदार है–यह मिश्री का दिखाई देने वाला रूप है, परन्तु मिश्री का स्वरूप है–उसकी मिठास। हर प्रकार की मिश्री मधुर होती है।

परम – पुण्य प्रतीक है, परम – ईश का नाम ।
तारक–मंत्र शक्ति–घर, बीजाक्षर है राम ।।3।।

परमेश्वर–स्वामी, उच्चतम शासक अर्थात् भगवान् का नाम परम पवित्रता का चिन्ह है–परम शुद्धता की मूर्ति है– नाम। ''राम'' जो शक्ति का पुंज है, पूर्ण अर्थात् मूल *मन्त्र* है, वह संसार-सागर से पार उतारने वाला है, उद्धार करने वाला है, मोक्ष-दाता है।

मन्त्र : वह सिद्ध किया हुआ शब्द जिसका उच्चारण हमारी रक्षा करे, जो पाप-मोचक है अर्थात् जो हमें पवित्र बना कर मुक्त (बन्धन-रहित)कर दे।

बीजाक्षर : 'रँ' अग्निबीज, 'अँ' सूर्य बीज, 'मँ' चन्द्रबीज। इन तीनों का एक बीजाक्षर है, राम–नाम (राम शब्द)

साधक–साधन साधिए, समझ सकल शुभ–सार ।
वाचक – वाच्य एक है, निश्चित धार विचार ।।4।।

अतएव हे साधक ! राम–मन्त्र को समूचे शुभों (अच्छाईयों) का तत्व (निचोड़) समझकर आध्यात्मिक साधनों (ढंगों) का अभ्यास करो। इस तथ्य को निश्चित रूप से धारण करो कि जिस वस्तु तथा शब्द–द्वारा उसे वर्णित किया जा रहा है, दोनों एक हैं, अर्थात् अपने हृदय में यह सुदढ़ विश्वास रखो कि नाम एवं नामी, वाचक एवं वाच्य एक ही हैं।

मंत्रमय ही मानिए, इष्ट देव भगवान् ।
देवालय है राम का, राम शब्द गुण खान ।।5।।

अपने पूज्य, आराध्य देवता श्री भगवान् को मंत्र में आसीन–विराजमान जानिये, स्थित जानिये। राम–शब्द जो गुणों का भण्डार है, स्रोत है, पुंज है, वह राम का मन्दिर है, निवास–स्थान है।

राम–नाम आराधिए, भीतर भर ये भाव ।
देव–दया अवतरण का, धार चौगुना चाव ।।6।।

अपने मन को उक्त वर्णित भावों से भर कर और तब राम की दया उतरने की प्रबल इच्छा–उत्सुकता रखकर, आतुर होकर राम–नाम के गुणों, अर्थों का चिन्तन कीजिये, राम–नाम की महिमा पर विचार कीजिए।

मंत्र धारणा यों कर, विधि से ले कर नाम ।
जपिए निश्चय अचल से, शक्ति–धाम श्री राम ।।7।।

विधिपूर्वक नाम-दीक्षा लेकर, राम-मंत्र को इस प्रकार ग्रहण–धारण कर के, अपने चित्त को दृढ़ निश्चयपूर्वक (स्थिरता पूर्वक) मंत्र पर टिका कर, श्री राम का, जो शक्ति का घर है, बार-बार उच्चारण करें (जाप करें)।

मंत्र धारणा : चित्त को केवल मन्त्र में बांध रखने का नाम मंत्र-धारणा है।

जप : राम–नाम के अर्थ की भावना करते हुए उसका बार–बार उच्चारण करना।

यथा वृक्ष भी बीज से, जल रज ऋतु–संयोग ।
पा कर, विकसे क्रमसे, त्यों मंत्र से योग ।।8।।

जिस प्रकार बीज, जल, मिट्टी और अनुकूल मौसम के सहयोग (मेल) से धीरे-धीरे *वृक्ष* बन जाता है, उसी प्रकार मंत्र-जाप से निरन्तर आध्यात्मिक प्रगति होती रहती है। *मंत्र-योग* : ऐसी पद्धति, जो मंत्र की साधना से भगवद् मिलन करा दे।

धारणा, ध्यान और समाधि तीनों का मंत्र से योग मंत्र–योग कहलाता है। नाम का जाप करो और उसके अर्थ की भावना में लीन हो जाओ–यह मंत्र–योग की विधि है।

यथा शक्ति परमाणु में, विद्युत् – कोष समान ।
है मंत्र त्यों शक्तिमय, ऐसा रखिए ध्यान ।।9।।

ऐसा ध्यान रखें, अटूट विश्वास हो कि जैसे परमाणु शक्ति का भण्डार है एवं बिजली–गह बिजली का कोष है, ठीक उसी प्रकार मंत्र भी शक्ति–कोष है। इस मन्त्र में पाप–ताप को मारने तथा अच्छे भाव को प्रफुल्लित करने की शक्ति है।

ध्रुव धारणा धार यह, राधिए मंत्र निधान ।
हरि–कृपा अवतरण का, पूर्ण रखिए ज्ञान ।।10।।

ऐसा अटल-विश्वास (**दृढ़-निश्चय)** रख कर, मंत्र-निधि, राम-मंत्र का चिन्तन करें (आराधें) तथा ऐसा पूर्णरूपेण बोध हो कि ऐसा करने से हरि-कृपा अवश्य उदित होगी, अवश्य उतरेगी।

ध्रुव धारणा : मंत्र में चित्त को अविचलित भाव से बांधना।

मंत्र निधान : मंत्रों का भण्डार – बीजाक्षर शब्द।

आता खिड़की द्वार से, पवन तेज का पूर ।
है कृपा त्यों आ रही, करती दुर्गुण दूर ।।11।।

जैसे खिड़की या द्वार खुलने पर दुर्गन्ध निकल जाती है और भरपूर वायु तथा प्रकाश प्रवेश करते हैं, उसी प्रकार राम–कृपा उपलब्ध होने पर सब दुर्गुण दूर हो जाते हैं तथा सद्‌गुण भर जाते हैं।

बटन दबाने से यथा, आती बिजली – धार ।
नाम जाप प्रभाव से, त्यों कृपा – अवतार ।।12।।

बटन दबाने से जैसे बिजली की धारा (Current) का प्रवाह होता है, उसी प्रकार नाम जपने से कृपा का अवतरण होता है।

खोलते ही जल नल ज्यों, बहता वारि बहाव ।
जप से कृपा अवतरित हो, तथा सजग कर भाव ।।13।।

टोंटी–नल खोलने से जैसे पानी निकलने लगता है, बहने लगता है, वैसे ही जाप से कृपा अवतरित होती है जो भावना को सजग कर देती है तथा हमारा विश्वास जीवन्त (Live-faith) बन जाता है।

राम शब्द को ध्याइये, मंत्र तारक मान ।
स्वशक्ति सत्ता जग करे, उपरि चक्र को यान ।।14।।

मंत्र को उद्धारक, निस्तारक, मुक्तिदाता मानकर 'राम' शब्द पर ध्यान लगायें। इससे आत्म-शक्ति तथा अपने होने का भाव–अस्तित्व जगता है और इस शक्ति का ऊपरी *चक्र* की ओर गमन होता है।

चक्र : शरीर में योग के अनुसार आठ चक्र; मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर (नाभि-चक्र), अनाहत (हृदय), विशुद्ध (कण्ठ), आज्ञा (त्रिकुटी), बिन्दु (ग्रीवा का शिखर) तथा सहस्रार (सिर)।

उपरि-चक्र : आज्ञा, बिन्दु तथा सहस्रार।

दशम द्वार से हो तभी, राम – कृपा अवतार ।
ज्ञान शक्ति आनन्दसह, साम शक्ति संचार //15//

तब दसवें *द्वार* से राम-कृपा का प्रवेश होता है, जिससे आत्म बोध–प्रबुद्धता, बल, आनन्द-सहित, मन को स्थिर एवं शान्त करने वाली सभी शक्तियों का विस्तार–संचार होता है।

दशम–द्वार : मानव देह को नव द्वार वाली नगरी कहा जाता है : दो द्वार आँखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुख तथा दो द्वार मूत्र एवं मल विसर्जन करने हेतु। दशम–द्वार अदश्य है और नौ द्वारों से ऊपर है।

देव दया स्वशक्ति का, सहस्र कमल में मिलाप ।
हो सत्पुरुष संयोग से, सर्व नष्ट हों पाप //16//

सत्पुरुष के सान्निध्य से तथा परमात्मा की दया से, कुण्डलिनी शक्ति का हजार पंखुड़ियों वाले कमल–सहस्रार, ब्रह्मधाम में मिलन हो जाता है, जिससे सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

देवदया से स्वशक्ति का हजार पंखुड़ियों वाले कमल –सहस्र दल कमल में मिलाप होता है। इस मिलाप में सत्पुरुष के सहयोग की आवश्यकता रहती है, तभी जीव के सब दोष नष्ट हो पाते हैं। परम कल्याण की प्राप्ति के लिये परमात्मा की दया, आत्म–शक्ति और संत–दया तीनों अपेक्षित हैं, जिनका यहाँ देव–दया, स्वशक्ति और सत्पुरुष संयोग शब्दों से उल्लेख किया गया है।

–: :–

नमस्कार सप्तक

नमस्कार के सात श्लोक (पद)

करता हूं मैं वन्दना, नत शिर बारम्बार ।
तुझे देव परमात्मन्, मंगल शिव शुभकार ॥1॥

मंगल, कल्याण तथा *शुभ* करने वाले परमात्मदेव, आपको मैं सिर झुकाकर बार-बार प्रणाम करता हूं।

वन्दना : नमस्कार

मंगल : कल्याणकारी, **समृद्धि-ऐसी** उन्नति जिससे हम उत्तरोत्तर आगे बढ़ते जाएँ (Benediction)

शिव : सौभाग्य, शान्त, (Happiness, Peace)

शुभ : शुभ शकुन, स्वस्ति (Auspicious)

अंजलि पर मस्तक किये, विनय भक्ति के साथ ।
नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ ॥2॥

दोनों जुड़े हुए हाथों के साथ, माथा झुका कर, नम्रता एवं भक्तिपूर्वक, हे सारे विश्व के स्वामी! आपको मेरा नमस्कार हो।

दोनों कर को जोड़ कर, मस्तक घुटने टेक ।
तुझ को हो प्रणाम मम, शत–शत कोटि अनेक ॥3॥

दोनों हाथों को जोड़ कर तथा मस्तक एवं घुटनों को भूमि पर टिका कर, आपको मेरा अनेकों सैंकड़ों–करोड़ बार प्रणाम हो।

पाप–हरण मंगल–करण, चरण–शरण का ध्यान ।
धार करूँ प्रणाम मैं, तुझ को शक्ति–निधान ॥4॥

पापों के नाशक एवं मंगल कारक शरण देने वाले आपके चरणों का भीतर ध्यान करता हुआ, शक्तियों के पुंज आपको, मैं प्रणाम करता हूँ।

भक्ति–भाव शुभ–भावना, मन में भर भरपूर ।
श्रद्धा से तुझ को नमूँ, मेरे राम हजूर ।।5।।

अपने मन को भक्ति पूर्ण एवं सद्भावनाओं से ओत–प्रोत करके, हे मेरे राम प्रभु! आपको श्रद्धा से नमन करता हूँ।

ज्योतिर्मय जगदीश हे, तेजोमय अपार ।
परम पुरुष पावन परम, तुझ को हो नमस्कार ।।6।।

हे प्रकाश स्वरूप, असीम ऊर्जस्वी जगत के स्वामी ! हे सबको पूर्ण पवित्र करने वाले, सर्वोत्तम परमात्मा (पुरुषोत्तम) ! आपको नमस्कार हो।

सत्य ज्ञान आनन्द के, परम धाम श्री राम ।
पुलकित हो मेरा तुझे, होवे बहु प्रणाम ।।7।।

हे सत्य, ज्ञान एवं आनन्द के सर्वोच्च मन्दिर, श्री राम ! गद्गद्–रोमांचित होकर आपको मेरा अनेक बार प्रणाम हो। यहाँ राम को सत्य, ज्ञान, आनन्द का परम–धाम अर्थात् अनन्त ब्रह्म–स्वरूप कहा गया है।

प्रातः पाठ

परमात्मा श्री राम परम–सत्य, प्रकाश–रूप,
परम ज्ञानानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान्,
एकैवाद्वितीय परमेश्वर, परम – पुरुष,
दयालु देवाधिदेव है, उसको बार–बार
नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार।।

सर्वोत्तम, महानतम, आत्मा श्री राम, परम सत्य (Absolute Truth) अपरिवर्तनशील तत्व, तेजोमय, सर्वोच्च ज्ञान–सर्वाधिक आनन्द के स्वभाव वाला, सब शक्तियों से युक्त, जिसके समान दूसरा कोई नहीं, जिससे अन्यत्र कोई नहीं, सबका शासक, स्वामी, पुरुषोत्तम, दयालु सभी देवों का देव है, उसे बार–बार नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार।

अमृतवाणी

रामामृत पद पावन वाणी,
राम – नाम धुन सुधा समानी।
पावन – पाठ राम – गुण – ग्राम,
राम – राम जप राम ही राम //1//

राम अमर करने वाला शब्द है, पवित्र करने वाला बोल है; राम नाम का गान **अमृत** समान है। राम के गुणों का समूह पवित्र पाठ है, शुद्ध करने वाला है, अतः राम–राम, राम ही राम का बार–बार उच्चारण करिये।

परम सत्य परम विज्ञान,
ज्योति–स्वरूप राम भगवान् ।
परमानन्द, सर्वशक्तिमान्,
राम परम है राम महान् //2//

राम परम सत्य है (Absolute Truth), सर्वोच्च अनुभव ज्ञान है, राम भगवान् प्रकाश रूप हैं, सर्वोत्कृष्ट आनन्द हैं तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न हैं, राम महान् एवं सर्वोत्तम हैं।

अमृत वाणी नाम उच्चारण,
राम – राम सुखसिद्धि–कारण ।
अमृतवाणी अमृत श्री नाम,
राम – राम मुद मंगल–धाम //3//

राम–नाम का उच्चारण **अमृत** शब्द का बोलना है, 'राम–राम' सुख सफलता प्रदान करने वाला है। नाम **अमृत** है, **अमृत** बोल है और आनन्द एवं अपार हर्ष का प्रदाता है।

अमृतरूप राम–गुण गान,
अमृत–कथन राम व्याख्यान ।

अमृत–वचन राम की चर्चा,
सुधा सम गीत राम की अर्चा //4//

राम के गुणों का गान (स्तुति) **अमृत** तुल्य है, राम की कथा **अमृत** है, राम की चर्चा में बोल भी **अमृत** हैं तथा इनकी पूजा **अमृत** समान गीत हैं।

अमृत मनन राम का जाप,
राम – राम प्रभु राम अलाप /
अमृत चिन्तन राम का ध्यान,
राम शब्द में शुचि समाधान //5//

राम का जाप मन का विचार-रूपी **अमृत** है, राम-राम प्रभु राम, **अमृत-संवाद** है। राम-ध्यान, चित्त द्वारा किया गया **अमृत-चिन्तन** है अर्थात् राम शब्द में जप, धारणा, ध्यान सब कुछ का सच्चा उत्तर समाहित है–राम शब्द इन सभी अभ्यासों के लिए उपयुक्त है।

मनन, जाप, अलाप, चिन्तन, ध्यान, समाधान सभी राम-नाम के साथ सम्बद्धित होकर **अमृत** हो जाते हैं। जाप शब्द का होता है और मनन अर्थ का। अलाप स्वर का और चिन्तन तत्व का होता है।

ध्यान स्वरूप का तथा समाधान (समाधि) में त्रिपुटी (ध्येय, ध्याता, सुध्यान) का लय होता है।

अमृत रसना वही कहावे,
राम – राम जहाँ नाम सुहावे /
अमृत कर्म नाम कमाई,
राम – राम परम सुखदाई //6//

जिह्वा, जिस पर राम–राम सुहाता है, विलसता है, वही **अमृत-तुल्य** मधुर है। राम–नाम की संचित पूंजी सुकृत–सत्कर्म है, राम–राम अविनाशी, आत्यन्तिक–सुख को देने वाला है।

अमृत राम – नाम जो ही ध्यावे,
अमृत पद सो ही जन पावे /
राम – नाम अमृत–रस सार,
देता परम आनन्द अपार //7//

जो जन **अमृतमय-मधुर** राम-नाम पर ध्यान लगाता है, वह ही अविनाशी-पद (मोक्ष-पद) को प्राप्त करता है अर्थात् जहां से फिर संसार में लौटना नहीं पड़ता है, उस स्थान को प्राप्त करता है। परमात्मा रस-स्वरूप है, अविनाशी है, **अमृत** है। उस **अमृत-रस** का सार राम-नाम है जो असीम सर्वोत्तम आनन्द प्रदान करता है।

[**अमृत-पद** ऐसी स्थिति को भी कहते हैं जो स्वयं तो अमर है ही, पर औरों को भी अमर बनाने में सक्षम है।]

राम – राम जप हे मना,
अमृत वाणी मान ।
राम – नाम में राम को,
सदा विराजित जान ।।8।।

रे मन! राम–राम को अमरत्व प्रदान करने वाला शब्द मान कर इसका बार–बार उच्चारण कर, जाप कर, इस नाम में परब्रह्म परमात्मा श्री राम को सदा विराजमान (विद्यमान) जान।

राम – नाम मुद मंगलकारी,
विघ्न हरे सब पातक हारी ।
राम – नाम शुभ – शकुन महान्,
स्वस्ति शान्ति शिवकर कल्याण ।।9।।

राम–नाम आनन्दित तथा कल्याण करने वाला है, रूकावटों को दूर करने वाला और पाप नष्ट करने वाला है। राम नाम शुभ एवं महान लक्षण (Omen) है, शान्ति, मंगल, कल्याण एवं प्रसन्न करने वाला है।

राम – राम श्री राम – विचार,
मानिए उत्तम मंगलाचार ।
राम – राम मन मुख से गाना,
मानो मधुर मनोरथ पाना ।।10।।

राम-राम विचार का उठना सर्वोत्तम शुभारम्भ मानिए। मुख तथा मन से– राम-राम गाने (Chanting) से मानो मनचाहे पदार्थ (फल) की प्राप्ति अर्थात् इच्छाओं की पूर्ति होती है।

[मधुर मनोरथ : ईश्वर दर्शन]

राम – नाम जो जन मन लावे,
उस में शुभ सभी बस जावे ।
जहाँ हो राम – नाम धुन–नाद,
भागें वहाँ से विषम – विषाद ।।11।।

जो व्यक्ति अपने मन में राम-नाम को आसीन कर लेता है, उसमें सभी प्रकार की धन्यता का वास हो जाता है, उसे सौभाग्य, सुख, समद्धि अर्थात् सब प्रकार के आशीर्वाद प्राप्त हो जाते हैं। जहाँ राम-नाम की धुन गूंजती है, वहाँ से दुःख, पीड़ा देने वाले शोक, संकट भाग जाते हैं।

विषम-विषाद : सत्वगुण से सुख, रजोगुण से दुःख और तमोगुण से विषाद, आलस्य, प्रमाद का प्रादुर्भाव होता है। विषाद ऐसा दुःख है जिससे छूटने का उपाय न सूझे। जब विषम (असम) हो जाता है तब सूझबूझ बिल्कुल नहीं रहती।

राम – नाम मन–तप्त बुझावे,
सुधा रस सींच शांति ले आवे ।
राम – राम जपिए कर भाव,
सुविधा सुविधि बने बनाव ।।12।।

राम–नाम मन की पीड़ा (व्यथा) को दूर करके, उसे **अमृत-तत्व** से सींच कर शान्ति लाता है। अतएव भाव–प्रेम से, प्रेमपूर्वक राम–राम जपिए। इससे अच्छे ढंग से हर प्रकार की अनुकूलता की तैयारी होती है, हर प्रकार के आराम, सुख का निर्माण होता है।

राम – नाम सिमरो सदा,
अतिशय मंगल मूल ।
विषम–विकट संकट हरण,
कारक सब अनुकूल ।।13।।

हे साधक! सदा राम-नाम का प्रेमपूर्वक जाप करो, उसे स्मरण रखो जो अत्यन्त मांगलिक है, मंगल का स्रोत है तथा जो पीड़ा पहुँचाने वाले असह्य तथा भयानक दुःखों–विपत्तियों को

दूर करके अर्थात् सब प्रकार की प्रतिकूलता को दूर करके अनुकूलता करने वाला है, हर प्रकार से रुचिकर, लाभकारी एवं सुखकर है।

विषम-विकट संकट : सब ओर से एक साथ असह्य तथा भयानक विपत्तियों का आ पड़ना।

जपना राम – राम है सुकृत,
राम – नाम है नाशक दुष्कृत ।
सिमरे राम – राम ही जो जन,
उसका हो शुचितर तन – मन //14//

राम–नाम का जपना सत्कर्म है, पुण्य–कर्म है, राम–नाम कुकर्मों (पाप–कर्मों) का नाश करने वाला है। जो कोई व्यक्ति राम–राम का भावपूर्वक जाप करता है, उसका तन एवं मन दोनों शुद्धतर (अति शुद्ध) हो जाते हैं।

जिसमें राम – नाम शुभ जागे,
उस के पाप – ताप सब भागे ।
मन से राम – नाम जो उच्चारे,
उस के भागें भ्रम भय सारे //15//

जिसमें राम-नाम रूपी शुभ जाग्रत हो जाता है, उसके पाप एवं *दुःख* भाग जाते हैं। जो राम-नाम का मन से अर्थात् मन लगाकर उच्चारण करता है, उसके संशय एवं *भय* दूर हो जाते हैं।

ताप : तीन प्रकार के दुःख (१) आध्यात्मिक (दैहिक एवं मानसिक) ज्वर, काम, क्रोध, चिन्ता, शोक आदि। (२) आधिभौतिक : दूसरे प्राणियों के कारण दुःख जैसे चोर द्वारा, सर्प-बिच्छू द्वारा (३) आधिदैविक : दैवी कारणों द्वारा दुःख : भूकम्प, बाढ़, सूखा आदि।

भय : अनिष्ट होने की आशंका जैसे जन, धन, मान-हानि। रोग-मत्यु से भय।

जिस में बस जाय राम सुनाम,
होवे वह जन पूर्णकाम ।
चित्त में राम – राम जो सिमरे,
निश्चय भव – सागर से तरे //16//

राम का सुन्दर, मधुर, समद्ध नाम जिस में आसीन हो जाता है, उस व्यक्ति की सारी कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। जो कोई चित्त में राम–राम का स्मरण करता है, वह संसार–सागर से निःसन्देह–अवश्य पार हो जाता है, मुक्त हो जाता है।

राम – सिमरन होवे सहाई,
राम – सिमरन है सुखदाई ।
राम – सिमरन सब से ऊँचा,
राम शक्ति सुख ज्ञान समूचा //17//

राम-जाप सहायक है (हर प्रकार की आवश्यकता पूरी करने वाला), सुख देने वाला है। *सिमरन* तो सर्वोच्च–सब कर्मों से ऊँचा-कर्म है क्योंकि राम-प्रभु तो बल–सामर्थ्य, सब शक्तियों के सर्व-सुख एवं पूर्ण ज्ञान-प्रकाश के पुंज हैं।

सिमरन : भावना सहित भगवन्नाम उच्चारण।

राम – राम ही सिमर मन,
राम – राम श्री राम ।
राम – राम श्री राम–भज,
राम – राम हरि – नाम //18//

रे मन! राम-राम का ही सिमरन कर, राम-राम परमेश्वर राम हैं। राम-राम प्रभु-राम का रसास्वादन कर, राम-राम *हरि* का नाम है।

हरि : पापों का हरण करने वाला परमात्मा।

[*भज* : जैसे गाय चारा खाकर, जुगाली करके रस लेती है, इसी प्रकार प्रभु राम की स्मति को बार–बार मन में लाकर रसास्वादन करना भजन–भजना कहलाता है।]

मात–पिता बान्धव सुत दारा,
धन जन साजन सखा प्यारा ।
अन्त काल दे सके न सहारा,
राम–नाम तेरा तारन हारा //19//

माता–पिता, भाई, पुत्र, पत्नी, धन, सम्बन्धी, पति–प्रियतम, प्रिय, मित्र, मरण–काल में कोई भी सहायक नहीं होते, केवल राम–नाम ही आपको तारने वाला है, आपका संरक्षक है।

सिमरन राम – नाम है संगी,
सखा स्नेही सु द् शुभ अंगी ।
युग – युग का है राम सहेला,
राम – भक्त नहीं रहे अकेला //20//

राम–नाम का सिमरन ही तेरा साथी है, मित्र है, प्रेमी है, हितकारी एवं शुभ–प्राणी है। राम तो अनादिकाल से, प्रत्येक युग में आपके साथ रहने वाला है, सदा साथ देने वाला है। अतः राम का भक्त कभी भी अकेला नहीं रहता। प्रभु राम सदैव अपने भक्त के साथ होते हैं।

निर्जन – वन विपद् हो घोर,
निबड़–निशा तम सब ओर ।
जोत जब राम – नाम की जगे,
संकट सर्व सहज से भगे ॥21॥

जन–रहित जंगल हो, भयंकर विपत्ति–संकट हो, घनेरी रात्रि का सब ओर अंधकार छाया हो, जैसे ही राम नाम की ज्योति जगमगाती है वैसे ही आसानी से सभी दुःख, दुर्भाग्य, दुर्दिन दूर भाग जाते हैं।

बाधा बड़ी विषम जब आवे,
वैर विरोध विघ्न बढ़ जावे ।
राम – नाम जपिए सुख दाता,
सच्चा साथी जो हितकर त्राता ॥22॥

जब उलझन भरी रुकावटों का आगमन हो, जब शत्रुता, प्रतिकूलता एवं अड़चनें बहुत बढ़ जाएँ, तब राम–नाम, जो सच्चा मित्र है, सदा हित करने वाला एवं रक्षक है और सुख का दाता है, उसका जाप कीजिए।

मन जब धैर्य को नहीं पावे,
कुचिन्ता चित्त को चूर बनावे ।
राम – नाम जपे चिन्ता चूरक,
चिन्तामणि चित्त चिन्तन पूरक ॥ 23॥

मन जब साहस, **दृढ़ता** खो बैठे अर्थात् स्थिरता को न प्राप्त कर सके, दुष्ट-चिन्ता चित्त के टुकड़े-टुकड़े कर दे–चिन्ताऐं चित्त को घेर लें, तब राम-नाम, जो चिन्ताओं को चूर्ण करने वाला–नाशक है, *चिन्तामणि* है, जो चित्त में उठने वाले सभी संकल्पों, सभी इच्छाओं की पूर्ति करने वाला है, उसकी आवत्ति करिये, उस नाम को जपिये।

चिन्तामणि : एक कल्पित रत्न जो अभीष्ट–मनचाहे फल का देने वाला है।

शोक सागर हो उमड़ा आता,
अति दुःख में मन घबराता /
भजिए राम – राम बहु बार,
जन का करता बेड़ा पार //24//

जब उदासी का सागर हाहाकार मचा दे अर्थात् संकट सागर में बाढ़ आ जावे और अति–दुःख के कारण मन घबराने लगे, पीड़ित हो, आकुल हो, तब बार–बार राम–राम, जो व्यक्ति को संकटों से राहत दिलाने वाला है, उसे प्रेमपूर्वक जपिए क्योंकि राम–नाम संकट–सागर से मानव जीवन–रूपी नाव को पार ले जाने वाला है।

कड़ी घड़ी कठिनतर काल,
कष्ट कठोर हो क्लेश कराल /
राम – राम जपिए प्रतिपाल,
सुख दाता प्रभु दीनदयाल //25//

संकटमय चौबीस घंटे व कठिनाई भरे समय में जब कठोर कष्टों से तथा भयानक व्यथा–*क्लेशों* से व्यक्ति घिर जाये, तब पालन करने वाले, सुख-दाता, दीनों पर दया करने वाले प्रभु राम के नाम को जपिये।
क्लेश : पांच क्लेश (१) अविद्या, (२) अस्मिता, (३) राग, (४) द्वेष (५) अभिनिवेश। इन्हें अविद्या की पांच ग्रन्थियां तथा क्लेश के कारण भी कहा जाता है।

घटना घोर घटे जिस बेर,
दुर्जन दुखड़े लेवें घेर /
जपिए राम – नाम बिन देर,
रखिए राम – राम शुभ टेर //26//

जिस समय कोई भयानक घटना घटित हो जाये तथा कुसंग–बुरे व्यक्ति एवं दुःख घेर लें तो बिना देर किये–तुरन्त राम–राम जपिए और राम–राम की हितैषी, अनुग्रहशील पुकार–रटन को बनाये रखिये अर्थात् आर्त होकर (भाव पूर्वक) पुकारते रहियेगा।

राम – नाम हो सदा सहायक,
राम – नाम सर्व सुखदायक ।
राम – राम प्रभु राम की टेक,
शरण शान्ति आश्रय है एक ॥27॥

राम–नाम नित्य सहायता करेगा, राम–नाम सम्यक् सुख देगा। राम–राम प्रभु राम का एक मात्र आसरा–सहारा है और उनकी शरण ही शान्ति स्थान है।

पूँजी राम – नाम की पाइये,
पाथेय साथ नाम ले जाइये ।
नाशे जन्म मरण का खटका,
रहे राम – भक्त नहीं अटका ॥28॥

अतएव राम–नाम की सम्पत्ति अर्जित एवं संचित कीजिये, नाम को ही जीवन यात्रा के लिए मार्ग व्यय–संबल बनाकर ले जाइये। इससे जन्म–मरण का भय नष्ट होगा और राम–भक्त की यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न होगी, वह कहीं रूका नहीं रहेगा।

राम – राम श्री राम है,
तीन लोक का नाथ ।
परम – पुरुष पावन प्रभु,
सदा का संगी साथ ॥29॥

राम-राम श्री राम तीनों *लोकों* (विश्व) का स्वामी है, सर्वोत्तम, सर्वोच्च, पवित्र करने वाला पुरुष है और नित्य साथ रहने वाला है।

तीन लोक : मत्युलोक (भू-लोक से पाताल लोक तक) अन्तरिक्ष (भुवर्लोक) और स्वर्गलोक (स्वर्गलोक से सत्यलोक तक)

यज्ञ तप ध्यान योग ही त्याग,
वन कुटी वास अति वैराग ।
राम – नाम बिना नीरस फोक,
राम – राम जप तरिए लोक ॥30॥

यज्ञ, तपस्या, ध्यान, त्याग, प्रभु मिलन के सब साधन, जंगल में कुटिया बना कर उसमें निवास, गहरा *वैराग्य,* ये सब क्रियाएं राम-नाम के बिना रसहीन, फीकी हैं। अतः राम-राम जपिए, और संसार-सागर को तर जाइये।

यज्ञ : जिस कर्म के करने से पर-हित हो एवं अपना कल्याण हो।

तप : आध्यात्मिक प्रगति के लिए कष्ट उठाना, जो सहन हो सके, वह तप।

ध्यान : मनोवत्तियों को संसार की ओर से हटाकर नाम पर टिकाना।

त्याग : विकारों, विषयासक्ति आदि का छूट जाना।

यज्ञ, दान और तप साधकों को पवित्र करने वाले कर्म हैं। त्याग शब्द का अर्थ दान भी होता है। अहंकार और फलेच्छा छोड़कर उपयोगी वस्तुओं का समर्पण दान या त्याग कहलाता है।

वैराग्य : इस लोक तथा परलोक के विषय-सम्बंधी सुखों की सर्वथा उपेक्षा कर देना वैराग्य है।

राम – जाप सब संयम साधन,
राम – जाप है कर्म आराधन /
राम – जाप है परम – अभ्यास,
सिमरो राम – नाम 'सुख–रास' //31//

संयम–मन इन्द्रियों पर नियन्त्रण के सभी साधन राम–जाप में समाये हुए हैं अर्थात् नाम–जप, संयम के लिए, अकेला *अभ्यास* पर्याप्त है। परमेश्वर *आराधन* के सभी कर्म भी राम–जाप में समाहित हैं। राम–जाप सर्वोत्तम (संपूर्ण) साधना है। अतः सुख–संचय (सुख–संग्रह) राम–नाम का सिमरन करो।

संयम : एक ध्येय में धारणा, ध्यान और समाधि लगाना संयम का साधन है।

अभ्यास : जप, ध्यान आदि को बार-बार, नित्य, निरन्तर करते रहना अभ्यास है।

आराधन : प्रभु की महिमा, उनके गुणों का गान।

राम – जाप कही ऊँची करणी,
बाधा – विघ्न बहु दुःख हरणी /
राम – राम महा–मंत्र जपना,
है सुव्रत नेम तप तपना //32//

राम–जाप एक अलौकिक कर्म, उच्च कर्म कहा गया है, ये अड़चनों, रूकावटों, अवरोधकों तथा दुःख–समूह को दूर करने वाला है। महान–मंत्र, राम–राम का जपना पुण्य प्रण–शपथ है, अच्छा–नियम एवं ऊँचा–तप है।

सुव्रत : राम–नाम का जाप सर्वदेश, सर्वकाल और सर्व अवस्थाओं में करते रहना सुव्रत कहलाता है।

राम – जाप है सरल – समाधि,
हरे सब आधि व्याधि उपाधि /
ऋद्धि–सिद्धि और नव – निधान,
दाता राम है सब सुख – खान //33//

राम-जाप सहज समाधि है तथा ये सब शारीरिक, मानसिक-रोगों और आरोपों व दैवी संकटों को दूर करने वाला है। आध्यात्मिक-शक्तियों और नौ निधियों का दाता तथा सर्व-सुखों की खान–खजाना है–राम।

ऋद्धि-सिद्धि : समद्धि, सफलता–अष्ट सिद्धियां।

राम – राम चिन्तन सुविचार,
राम – राम जप निश्चय धार /
राम – राम श्री राम – ध्याना,
है परम – पद अमृत पाना //34//

राम-राम पर चित्त टिकाना सुन्दर विचार है अर्थात् राम-नाम का विचारों में बस जाना, हर समय भगवद्-विचारों का स्फुरण उदात्त स्थिति है, अतः **दृढ़** निश्चयपूर्वक राम-राम जपो। राम-राम श्री राम को ध्याने का तात्पर्य है, उच्चतम धाम-अवस्था रूपी **अमृत** की प्राप्ति।

परम-पद : ब्रह्म धाम। जहां सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि प्रकाश नहीं करती, जो स्वयं ज्योतिष्मान् है। जिसमें जाकर जीव फिर पीछे नहीं लौटता, वह परम-धाम है। जहां सदा परमानन्द है, जो दुःख, शोक, जरा, मत्यु रहित है, वह परम-पद है।

राम – राम श्री राम हरि,
सहज परम है योग /
राम – राम श्री राम – जप,
दाता अमृत – भोग //35//

राम–राम, श्री राम (हरि–नाम) प्रभु से जुड़ने का सर्वोत्तम एवं आसान साधन है। अतएव राम–राम श्री राम का जाप करें, जो सेवन हेतु अमत देने वाला है।

नाम चिन्तामणि रत्न अमोल,
राम – नाम महिमा अनमोल ।
अतुल प्रभाव अति – प्रताप,
राम – नाम कहा तारक जाप //36//

राम–नाम–रूपी चिन्तामणि ऐसा रत्न है, जिसका मूल्य नहीं डाला–आंका जा सकता अर्थात् अमूल्य है। राम–नाम की महानता मूल्यवान है, इसके प्रभाव की तुलना नहीं है और यह अति शक्तिशाली है। राम–नाम तो उद्धारक जाप है अर्थात् इसका जाप मुक्ति–दाता है।

बीज अक्षर महा–शक्ति–कोष,
राम – राम जप शुभ–सन्तोष ।
राम – राम श्री राम – राम मंत्र,
तंत्र बीज परात्पर यंत्र //37//

राम-नाम के मूल अक्षर महाशक्ति का स्रोत (खान) हैं, राम-राम का जाप शुभ सन्तोष है, सन्तोष देकर धन्य करने वाला है। राम-राम श्री राम-मंत्र तांत्रिक-विद्या का भी मूल है तथा सर्वोत्कृष्ट रक्षा कवच है, इससे बढ़कर *कोई तंत्र यंत्र* नहीं अर्थात् राम-मंत्र तंत्र भी है और उच्चतर यंत्र भी है। जो राम-दरबार से प्राप्त नहीं हो सका, वह कहीं और से भी नहीं मिल सकेगा।

तंत्र : तांत्रिक विद्या के सिद्धान्त, मंत्र साधना की विशेष विधियां।

यंत्र : ताबीज, सिद्ध मंत्रों द्वारा कार्य सिद्धि के ढंग, अष्ठदल कमल आदि विविध चक्राकृति।

बीजाक्षर पद पआ प्रकाशे,
राम – राम जप दोष विनाशे ।
कुण्डलिनी बोधे सुषुम्ना खोले,
राम – मंत्र अमृत – रस घोले //38//

मूल मंत्र भीतर स्थित कमल-चक्रों को क्रमशः खिला देता है। राम-राम का जाप दोषों–दुर्गुणों को विनष्ट कर देता है। *कुण्डलिनी* शक्ति को उद्बोधित–जागत करता है तथा

सुषुम्ना नाड़ी को खोल देता है। राम मंत्र, अमत रूपी रस भीतर घोल देता है–अमत-रस भर देता है।

कुण्डलिनी : सर्पाकार सुषुप्त शक्ति जो सबसे नीचे स्थित मूलाधार-चक्र में निवास करती है।

सुषुम्ना : कमल-नाल में इंगला-पिंगला के बीच स्थित मध्य-नाड़ी। इसी के बीच **जागृत** कुण्डलिनी ऊपर के चक्रों की ओर गमन करती है।

उपजे नाद सहज बहु – भांत,
अजपा जाप भीतर हो शान्त /
राम – राम पद शक्ति जगावे,
राम – राम धुन जभी रमावे //39//

अनेक प्रकार की दिव्य ध्वनि आसानी से ही उद्‌भूत हो जाती है, भीतर शान्त करने वाला, बिना प्रयत्न होने वाला जाप निरन्तर आरम्भ हो जाता है। जब मन राम-राम मधुर धुन में रम जाता है तब राम-राम के पद भीतरी शक्तियों को **जागृत** कर देते हैं।
नाद : समाधि अवस्था में सुनाई देने वाला सूक्ष्म शब्द।

राम – नाम जब जगे अभंग,
चेतन – भाव जगे सुख–संग /
ग्रन्थी अविद्या टूटे भारी,
राम – लीला की खिले फुलवारी //40//

जब अविराम–निरन्तर राम–नाम के भीतर गूंजने–जगने से ''मैं आत्मा हूँ'' ऐसी चैतन्य भावना परमानन्दपूर्वक–सुख सहित **जागृत** होती है और अविद्या की ग्रन्थि (गांठ) – ''मैं देह हूँ'' खुल जाती है, अर्थात राम नाम के प्रकाश से अज्ञानता का अंधकार दूर हो जाता है , तब राम–लीला–रचना रूपी फुलवारी खिल जाती है।

पतित – पावन परम – पाठ,
राम – राम जप याग /
सफल सिद्धि कर साधना,
राम – नाम अनुराग //41//

राम–राम की आवत्ति जप–यज्ञ है। ये यज्ञ पतितों को पवित्र करने वाला है तथा परम अध्ययन (सर्वोच्च पाठ्य–सामग्री) है। राम–नाम में प्रीति–साधना को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर देती है।

तीन लोक का समझिए सार,
राम – नाम सब ही सुखकार ।
राम – नाम की बहुत बड़ाई,
वेद पुराण मुनि जन गाई ॥42॥

सुख प्रदान करने वाला राम-नाम सारे विश्व की आत्मा है, तत्व है, ऐसा समझ लीजिए। राम-नाम का माहात्म्य, इसका प्रताप तो वेदों, पुराणों एवं मुनियों ने भरपूर गाया है।

तीन लोक का सार : 'रँ' अग्निबीज (अग्नि का स्थान है भू-लोक), 'अँ' आदित्य बीज (सूर्य का स्थान है स्वर्गलोक), 'मँ' चन्द्रबीज (चन्द्र का स्थान दोनों के मध्य में अंतरिक्ष लोक है) इस प्रकार राम-नाम तीनों लोकों का सार है।

मुनि : जो मनन में मग्न रहता है।

यति सती साधु–संत सयाने,
राम – नाम निश – दिन बखाने ।
तापस योगी सिद्ध ऋषिवर,
जपते राम – राम सब सुखकर ॥43॥

यति, पतिव्रता–साध्वी, साधु–सन्त एवं बुद्धिमान सभी दिन-रात राम-नाम का गुण-गान करते हैं। तपस्वी, योगी, सिद्ध एवं ऋषि-महर्षि सब सुखों के दाता राम-राम का जाप करते हैं।

[*यति* : इन्द्रियों तथा मन का दमन करने वाला।]

[*सती* : पतिव्रता।]

[*सिद्ध* : जिसने आध्यात्मिक शक्तियाँ प्राप्त की हैं।]

भावना भक्ति भरे भजनीक,
भजते राम – नाम रमणीक ।
भजते भक्त भाव – भरपूर,
भ्रम – भय भेद–भाव से दूर ॥44॥

श्रद्धा एवं भक्तिपूर्ण भजन गाने वाले गायक–भक्त अति सुन्दर राम–नाम को भजते हैं। भक्त, भाव–भरे–प्रेमपूर्वक भजन–गुण–गान द्वारा संशय, भय तथा पक्षपात से दूर रहते हैं।

पूर्ण पंडित पुरुष – प्रधान,
पावन – परम पाठ ही मान ।
करते राम – राम जप – ध्यान,
सुनते राम अनाहद - तान ।।४५।।

पूरे विद्वान, मुखिया जन इस पाठ को परम पवित्र एवं पवित्र करने वाला मानकर राम-राम का नित्य जाप एवं ध्यान करते हैं तथा भीतर 'राम' शब्द की सूक्ष्म–दिव्य ध्वनि सुन आनन्द विभोर होते हैं।

अनाहद तान : जिह्वा के अग्र में प्रकट होने वाली वाणी बैखरी कहलाती है, कंठ में मध्यमा, हृदय में पश्यन्ती और नाभि मण्डल में प्रकट होने वाली परा-वाणी कहलाती हैं। पश्यन्ती के नाद को अनाहद या अनहद नाद कहते हैं। अजपा जाप में यह नाद चलता है।

इस में सुरति सुर रमाते,
राम – राम स्वर साध समाते ।
देव देवीगण दैव विधाता,
राम – राम भजते गणत्राता ।।46।।

राम-नाम ध्वनि-नाद में प्रेमी–अनुरक्त, देवता एवं साधु लीनता लाभ करते हैं, खो जाते हैं, आनन्द मग्न रहते हैं। राम-नाम को तो देवता, देवियाँ, दिव्यलोक-वासी, विश्व के सष्टिकर्ता एवं जन-रक्षक सभी भजते हैं अर्थात् वैष्णव, शैव, शाक्त अपने अपने इष्टों सहित सभी राम-राम भजते हैं।

सुर : इन्द्र आदि देवता
देव : ब्रह्मा, शिव आदि देवता
देवीगण : सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती
दैव : दिव्यलोक-वासी
विधाता : सष्टिकर्ता
गणत्राता : शिव, विष्णु, शक्ति, गणपति आदि।

राम – राम सुगुणी जन गाते,
स्वर – संगीत से राम रिझाते ।
कीर्तन – कथा करते विद्वान,

सार सरस संग साधनवान् //47//

अच्छे गुणवान व्यक्ति राम–राम गाते हैं। अपने मधुर स्वर, सुन्दर गीतों से राम को प्रसन्न करते हैं। पढ़े लिखे–शास्त्रज्ञ तथा साधक राम की कीर्ति गाते हैं, उनका कथन, उनकी तत्व सहित मधुर चर्चा करते हैं।

मोहक मंत्र अति मधुर,
राम – राम जप ध्यान /
होता तीनों लोक में,
राम – नाम गुण – गान //48//

राम–राम का उच्चारण (जप) तथा ध्यान अत्यन्त मधुर एवं आकर्षक–मन को मुग्ध करने वाला मंत्र है। तीनों लोकों में इसका गुण–गान–यशोगान होता है।

मिथ्या मन–कल्पित मत–जाल,
मिथ्या है मोह – कुमद – बैताल /
मिथ्या मन – मुखिया – मनोराज,
सच्चा है राम – नाम जप काज //49//

मन द्वारा रचित–मन गढ़न्त भिन्न–भिन्न पंथ असत् हैं–नश्वर हैं, मोह घमंड का भूत भी असत् है। मन को प्रमुखता देना, मन द्वारा अनुशासित–नियन्त्रित होना अर्थात् मन के राज्य में रहना भी मिथ्या है। राम–नाम जप रूपी कार्य ही सत्य है।

मिथ्या है वाद – विवाद विरोध,
मिथ्या है वैर निंदा हठ क्रोध /
मिथ्या द्रोह दुर्गुण दुःख खान,
राम – नाम जप सत्य निधान //50//

खंडन मंडन, व्यर्थ का तर्क–वितर्क तथा प्रतिकूलता असत् है। शत्रुता, पर–दोष वर्णन, दुराग्रह, क्रोध, दुर्भावना, बुरे–गुण मिथ्या तथा दुःखालय हैं। केवल राम–नाम जाप ही सत्य का भण्डार है।

सत्य – मूलक है रचना सारी,
सर्व – सत्य प्रभु – राम पसारी /

बीज से तरु मकड़ी से तार,
हुआ त्यों राम से जग विस्तार //51//

सारी **सृष्टि** के मूल में सत्य है। यह सर्व सत्यों के सत्य प्रभु राम द्वारा विकसित हुई है अर्थात् प्रभु-राम ने इसे फैलाया है। जैसे बीज से **वृक्ष** तथा मकड़ी द्वारा तारों का जाल, ऐसे ही राम द्वारा सारा विश्व **विस्तृत** हुआ है।

विश्व – वृक्ष का राम है मूल,
उस को तू प्राणी कभी न भूल /
साँस – साँस से सिमर सुजान,
राम – राम प्रभु – राम महान् //52//

विश्व–रूपी **वृक्ष** का आदि मूल (बीज) राम है। हे प्राणी! तू इस तथ्य को (सत्य को) कभी न भूल। अतः हे बुद्धिजीव! तू प्रत्येक श्वास प्रश्वास के साथ उस महान प्रभु राम का सिमरन कर, उसे स्मरण कर।

लय उत्पत्ति पालना – रूप,
शक्ति – चेतना आनंद – स्वरूप /
आदि अन्त और मध्य है राम,
अशरण–शरण है राम–विश्राम //53//

राम जो बेसहारों का सहारा है, उन्हें शरण अर्थात् विश्राम देने वाला है, वह विध्वंस, **सृष्टि** एवं पालन–कर्ता–रूप है, तथा जिसका स्वभाव है, परा-शक्ति, ज्ञान व आनन्द-सच्चिदानन्द, वही राम **सृष्टि** का आरम्भ, मध्य एवं अन्त है।

राम – नाम जप भाव से,
मेरे अपने आप /
परम – पुरुष पालक–प्रभु,
हर्ता पाप त्रिताप //54//

अतः हे मेरे, अपने आप! तू प्रेमपूर्वक बड़े भाव–चाव से राम–नाम का जाप कर। राम तो पुरुषोत्तम है, स्वामी है, सबकी पालना करने वाला तथा पाप–समुच्चय एवं तीनों तापों का हरण–विध्वंस करने वाला है।

राम – नाम बिना वृथा विहार,
धन – धान्य सुख – भोग पसार /

वृथा है सब सम्पद् सम्मान,
होवे तन यथा रहित प्राण //55//

सब प्रकार का मनोरंजन, भोग एवं भोग सामग्री धन–धान्य, (अन्न) सुखों का विस्तार, राम–नाम बिना निरर्थक–नीरस है। सारा ऐश्वर्य, मान–सम्मान भी उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे बिना प्राण के तन हो।

नाम बिना सब नीरस स्वाद,
ज्यों हो स्वर बिना राग विषाद /
नाम बिना नहीं सजे सिंगार,
राम–नाम है सब रस सार //56//

राम–नाम के बिना सब स्वाद ऐसे रसहीन–फीके हैं जैसे अच्छे स्वर के बिना संगीत, उदासी भरे–अप्रिय गीत हों। नाम के बिना श्रृंगार (सजावट) भी आकर्षित नहीं करता–प्रभावहीन होता है। राम–नाम ही सब स्वादों का निचोड़ है, प्राण है।

जगत् का जीवन जानो राम,
जग की ज्योति जाज्वल्यमान /
राम – नाम बिना मोहिनी – माया,
जीवन–हीन यथा तन – छाया //57//

सारे विश्व का आत्मा राम को जानो, (विश्वात्मा अर्थात् सर्वात्मा) संसार की जगमगाती हुई ज्योति है–'राम'। राम–नाम के बिना तो राम की भ्रमित करने वाली वह शक्ति–माया, जिससे सष्टि का सारा कार्य चलता है, ऐसे ही जीवन शून्य–निष्प्राण है, जैसे तन की छाया।

सूना समझिए सब संसार,
जहाँ नहीं राम – नाम संचार /
सूना जानिए ज्ञान – विवेक,
जिस में राम – नाम नहीं एक //58//

राम–नाम की व्याप्ति के बिना सारा संसार उजाड़ समझिए। वह ज्ञान–विवेक भी खोखला, ओछा है, जो राम–नाम से रहित हो।

सूने ग्रंथ पंथ मत पोथे,
बने जो राम – नाम बिन थोथे /

राम – नाम बिन वाद – विचार,
भारी भ्रम का करे प्रचार //59//

सभी धर्म–ग्रन्थ–शास्त्र, सम्प्रदाय एवं धार्मिक सिद्धान्त तथा बड़ी–बड़ी पुस्तकें राम–नाम के बिना रद्दी हैं। बिना राम–नाम के चर्चा, तर्क, चिन्तन; भारी भ्रान्ति (Confusion) फैलाने वाले हैं।

राम – नाम दीपक बिना,
जन–मन में अन्धेर /
रहे, इस से हे मम–मन,
नाम सुमाला फेर //60//

राम–नाम रूपी दीपक के बिना मन में अंधकार छाया रहता है। अतः मेरे मन! तू राम–नाम की सुन्दर माला फेर।

राम – राम भज कर श्री राम,
करिए नित्य ही उत्तम काम /
जितने कर्तव्य कर्म कलाप,
करिए राम – राम कर जाप //61//

राम–राम, श्री राम का उच्चारण गुण–गान करके नित्य ही श्रेष्ठ कर्म–सुकृत–सत्कर्म कीजिए। राम नाम जप, आराधन, सिमरन, चिन्तन, ध्यान ही तो सर्वश्रेष्ठ – सर्वोत्तम कर्म हैं। अतः ऐसे सर्वोच्च कर्म को नित्य ही करते रहिए तथा सभी कर्तव्य, कर्म, व्यापार एवं काम –धंधा करते हुए भी 'राम–राम' जपते रहिये। इस का अभिप्राय है कि 'मुख में हो राम राम और हाथ से करिए उचित काम।'

करिए गमनागम के काल,
राम – जाप जो करता निहाल /
सोते जगते सब दिन याम,
जपिए राम – राम अभिराम //62//

आते जाते समय भी राम–जाप करते रहें, यह तुष्ट एवं प्रसन्न करता है। सोते–जागते, हर समय–दिन–रात–आठों प्रहर–नित्य, सुन्दर–मनोहर राम–राम जपते रहें।

जपते राम – नाम महा – माला,
लगता नरक – द्वार पै ताला ।
जपते राम – राम जप पाठ,
जलते कर्मबन्ध यथा काठ ।।63।।

राम-नाम की महा-माला जपते-जपते नरक के द्वारों पर ताला लग जाता है अर्थात् राम-नाम जपने वाला भक्त नरक में प्रवेश नहीं करता, अपितु राम-राम के जाप से, पुनरावत्ति से, कर्म द्वारा अर्जित *बन्धन* ऐसे जलते हैं–जैसे लकड़ी।

बन्धन : स्वार्थ, अहंकार, द्वेष, ईर्ष्या प्रेरित कर्म बांधते हैं।

तान जब राम – नाम की टूटे,
भांडा–भरा अभाग्य भय फूटे ।
मनका है राम – नाम का ऐसा,
चिन्ता–मणि पारस–मणि जैसा ।।64।।

जब राम-नाम की धुन भीतर निरन्तर गूँजती है, तब भय तथा दुर्भाग्य से भरा हुआ बर्तन भी टूट-फूट जाता है, टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। राम-नाम का मनका (Bead) चिन्तामणि, *पारस-मणि* जैसा है।

पारस-मणि : अनमोल पत्थर जो स्पर्श मात्र से लोहे को स्वर्ण बना देता है।

राम – नाम सुधा–रस सागर,
राम – नाम ज्ञान गुण–आगर ।
राम – नाम श्री राम–महाराज,
भव – सिन्धु में है अतुल–जहाज ।।65।।

राम–नाम **अमृत** का सागर है। राम–नाम आत्म–विद्या तथा सद्‌गुणों का अक्षय–भण्डार है। राम–नाम श्री राम महाराज–महान् स्वामी, संसार–रूपी सागर में अद्वितीय जहाज है।

राम – नाम सब तीर्थ – स्थान,
राम – राम जप परम – स्नान ।
धो कर पाप–ताप सब धूल,
कर दे भय–भ्रम को उन्मूल ।।66।।

राम–नाम में सब तीर्थ–स्थान समाये हुए हैं, राम–राम का जप सर्वोत्तम स्नान–बाहर भीतर शुद्ध करने वाला है। यह पाप एवं ताप की धूल को धोकर भय, संशय, भ्रान्ति को जड़ से उखाड़ फेंकता है।

राम – जाप रवि–तेज समान,
महा – मोह–तम हरे अज्ञान ।
राम – जाप दे आनन्द महान्,
मिले उसे जिसे दे भगवान् ।।67।।

राम–जाप सूर्य के प्रकाश जैसा है, जो मोह तथा अज्ञानता के घोर अंधकार को दूर कर देता है। वास्तव में राम–जाप अत्यधिक आनन्द (परमानन्द) प्रदान करता है, पर यह आनन्द उसे ही मिलता है, जिसे भगवान् स्वयं देता है।

राम – नाम को सिमरिये,
राम – राम एक तार ।
परम – पाठ पावन – परम,
पतित अधम दे तार ।।68।।

राम–नाम का अखण्ड सिमरन करिये, अविराम, अनवरत राम–राम–राम सिमरिये (स्मरण कीजिये)। यह उच्चतम पाठ (Lesson) है, सर्वाधिक पवित्र करने वाला है तथा नीचतम पापी, अति–दुष्ट का भी उद्धार करने वाला है।

माँगू मैं राम–कृपा दिन रात,
राम–कृपा हरे सब उत्पात ।
राम–कृपा लेवे अन्त सम्भाल,
राम – प्रभु है जन प्रतिपाल ।।69।।

मैं दिन–रात राम–कृपा माँगता हूँ क्योंकि राम–कृपा सभी अनर्थों से, दुर्दशा से, उथल–पुथल से बचाती है, राम–कृपा अन्त–समय रक्षा करती है। राम–प्रभु तो सबका प्रतिपालन करने वाले–रक्षक हैं।

राम–कृपा है उच्चतर – योग,
राम–कृपा है शुभ संयोग ।
राम–कृपा सब साधन–मर्म,

राम–कृपा संयम सत्य धर्म //70//

राम–कृपा सर्वोच्च–योग है। राम–कृपा परम–सौभाग्य, सुअवसर है, दैव–योग है। राम–कृपा सब आध्यात्मिक साधनों–अभ्यासों में रहस्य है, गोपनीय तत्व है। राम–कृपा ही वास्तविक इन्द्रिय–दमन, मनोनिग्रह एवं सच्चा धर्म है।

राम – नाम को मन में बसाना,
सुपथ राम – कृपा का है पाना /
मन में राम–धुन जब फिरे,
राम – कृपा तब ही अवतरे //71//

मन में राम-नाम को आसीन करना राम-कृपा प्राप्ति का सुन्दर मार्ग–साधन है। जब मन में राम-*धुन* झंकारित होती है, गूँजती है, तब ही राम-कृपा प्राप्त होती है।

धुन : सुर-ताल सहित राम-नाम का भीतर चलना, ध्वनि एवं प्रतिध्वनि।

रहूँ मैं नाम में हो कर लीन,
जैसे जल में हो मीन अदीन /
राम–कृपा भरपूर मैं पाऊँ,
परम प्रभु को भीतर लाऊँ //72//

जैसे जल में मछली निर्भय होकर मस्त रहती है, उसी प्रकार मैं राम–नाम में निमग्न होकर रहूँ। मैं प्रचुर मात्रा में राम–कृपा प्राप्त करूँ और अपने प्रियतम स्वामी को भीतर प्रकट करूँ–अर्थात् राम एवं राम–कृपा में अभिन्नता है।

भक्ति – भाव से भक्त सुजान,
भजते राम–कृपा का निधान /
राम–कृपा उस जन में आवे,
जिस में आप ही राम बसावे //73//

बुद्धिमान–श्रद्धालु–भक्त प्रेमपूर्वक, भक्ति–भावना सहित कृपा के पुंज राम को भजते हैं। राम–कृपा उस भक्त में अवतरित होती है जिस पर वह स्वयं कृपा बरसाता है।

कृपा–प्रसाद है राम की देनी,
काल–व्याल जंजाल हर लेनी /
कृपा–प्रसाद सुधा–सुख–स्वाद,

राम – नाम दे रहित विवाद //74//

कृपा–रूपी प्रसाद तो राम द्वारा दी गई भेंट है। यह काल–रूपी सर्प–नाग की लपेट–कुंडली से, वेदना से छुटकारा दिलाती है। निःसन्देह, निर्विवाद राम का नाम, कृपा–रूपी प्रसाद द्वारा अमत–सुख का स्वाद देता है।

प्रभु–प्रसाद शिव – शान्ति – दाता,
***ब्रह्म-धाम** में आप पहुँचाता /*
प्रभु–प्रसाद पावे वह प्राणी,
राम – राम जपे अमृत – वाणी //75//

प्रभु द्वारा दिया गया कृपा–प्रसाद अर्थात् प्रभु प्रसन्नता, मांगलिक है एवं शान्ति की प्रदाता है। प्रसाद तो अपने आप ब्रह्म–धाम में ले जाता है। यह प्रसाद उसी प्राणी को प्राप्त होता है, जो राम–राम रूपी दिव्य शब्द का निरन्तर उच्चारण करता है।

औषध राम – नाम की खाइये,
मृत्यु जन्म के रोग मिटाइये /
राम – नाम अमृत रस–पान,
देता अमल अचल निर्वाण //76//

राम–नाम की औषधि का सेवन कीजिए और जन्म–मरण के रोग से मुक्त हो जाइये, रोग को नष्ट कर दीजिए। राम–नाम रूपी **अमृत** का सेवन शुद्ध–सुस्पष्ट एवं स्थिर मोक्ष प्रदान करता है।

राम – राम धुन गूँज से,
भव – भय जाते भाग /
राम – नाम धुन ध्यान से,
सब शुभ जाते जाग //77//

राम–राम ध्वनि की प्रतिध्वनि से जन्म–मरण का भय दूर हो जाता है और राम–राम ध्वनि (Sound) पर ध्यान लगाने से–एकाग्रचित्त होने से सभी अच्छाईयां प्रकट हो जाती हैं, सौभाग्य उदित होता है।

माँगूं मैं राम – नाम महादान,

करता निर्धन का कल्याण ।
देव – द्वार पर जन्म का भूखा,
भक्ति प्रेम अनुराग से रूखा ।।78।।

मैं राम–नाम का विशिष्ट दान माँगता हूं–प्रभु राम से उनके मधुर नाम का महान्–उच्चतम दान माँगता हूँ, यह निर्धन, निर्बल–दरिद्री का उद्धार–कल्याण करने वाला है। मैं जन्म–जन्मान्तर का भूखा राम–द्वार पर खड़ा हूँ, न मुझमें भक्ति, न प्रेम, न श्रद्धा और न ही अनुरक्ति है।

'पर हूँ तेरा'–यह लिये टेर,
चरण पड़े की रखियो मेर ।
अपना आप विरद – विचार,
दीजिए भगवन्! नाम प्यार ।।79।।

परन्तु यही मेरी करुण पुकार है कि ''मैं तेरा हूँ''; अतः चरणों में गिरे मुझको संभालो, मुझ पर मेहर करो, कृपा करो। हे प्रभु! आप मेरी त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर अपने सामर्थ्य, अपने स्वभाव, अपनी उच्च यश–कीर्ति का विचार करके, मुझे अपने नाम की प्रीति दीजिए।

राम – नाम ने वे भी तारे,
जो थे अधर्मी – अधम हत्यारे ।
कपटी – कुटिल – कुकर्मी अनेक,
तर गये राम – नाम ले एक ।।80।।

राम–नाम ने तो वे भी तार दिए अर्थात् उन सब का भी उद्धार कर दिया जो धर्म–हीन–नास्तिक थे, नीच थे, खूनी थे, छली, धोखेबाज थे, घणित–अश्लील–बुरे कर्म करने वाले अनेक पापी थे, वे भी सब एक राम–नाम ले कर तर गये।

तर गये धृति – धारणा हीन,
धर्म–कर्म में जन अति दीन ।
राम – राम श्री राम – जप जाप,
हुए अतुल – विमल – अपाप ।।81।।

जो **दृढ़-निश्चयी** नहीं, अविश्वासी थे, असहनशील थे, जिनका मन अस्थिर—भगवान् पर नहीं टिकता, अनैतिक कर्म करने वाले अर्थात् जिनके कर्म धर्मानुकूल नहीं थे, ऐसे धर्म एवं कर्म-हीन—तुच्छ कर्मी भी, राम-राम श्री राम का जाप जप कर निष्पाप हो गये, ऐसे पवित्र हो गये कि उनकी शुद्धता की तुलना नहीं की जा सकती अर्थात् वे सब बिल्कुल—नितान्त निर्मल—पाप रहित हो गये।

धति : **धैर्य-दृढ़** निश्चय—दढ़ संकल्प (Steadiness)

राम – नाम मन मुख में बोले,
राम – नाम भीतर पट खोले ।
राम – नाम से कमल – विकास,
होवें सब साधन सुख—रास //82//

राम—नाम मुख से एवं मन से बोलने से भीतर के द्वार खुल जाते हैं, अज्ञानता का पर्दा हट जाता है, फट जाता है। राम—नाम से हृदय—कमल खिल जाता है, विकसित होता है तथा साधना सुखमयी—आनन्दमयी हो जाती है, अर्थात् सफलीभूत हो जाती है।

राम – नाम घट भीतर बसे,
साँस – साँस नस – नस से रसे ।
सपने में भी न बिसरे नाम,
राम – राम श्री राम – राम – राम //83//

जब राम—नाम शरीर एवं मन में बस जाये और सांस—सांस तथा नाड़ी—नाड़ी से (हर तंत्रिका से) टपकने लगे अर्थात् राम—नाम भीतर इस प्रकार समा जाये कि प्रत्येक रोम, अंग एवं कोशिका (Cell) से ये ऐसे रिसे—जैसे पहाड़ी चश्मे से जल रिसता है। तब स्वप्न में भी कभी राम—नाम का विस्मरण नहीं होता है। राम—राम श्री राम—राम—राम नित्य याद रहता है; नाम—स्मरण नित्य बना रहता है।

राम – नाम के मेल से,
सध जाते सब – काम ।
देव—देव देवे यदा,
दान महा सुख – धाम //84//

राम—नाम के संयोग से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं, पूर्ण हो जाते हैं। व्यक्ति धन्य हो जाता है, कृत—कृत्य हो जाता है। इस आत्यन्तिक सुख का कभी क्षय न

होने वाला धाम–भण्डार महा–दान के रूप में तब मिलता है जब देवों के देव प्रभु राम देते हैं।

अहो! मैं राम – नाम धन पाया,
कान में राम – नाम जब आया ।
मुख से राम – नाम जब गाया,
मन से राम – नाम जब याया //85//

मेरा अहोभाग्य! मैंने तब से राम–नाम रूप धन प्राप्त कर लिया जब से राम–नाम मेरे कान में प्रविष्ट हुआ, जब से मैंने राम–नाम मुख से गाना आरम्भ किया तथा जब से राम नाम–मंत्र पर मेरा मन एकाग्र हुआ–मेरा ध्यान लगने लगा।

पा कर राम – नाम धन–राशी,
घोर – अविद्या विपद् विनाशी ।
बढ़ा जब राम – प्रेम का पूर,
संकट – संशय हो गये दूर //86//

राम–नाम की पूँजी प्राप्त कर गहरी अज्ञानता (महाअज्ञानता) द्वारा उत्पन्न एवं दिया गया महा दुःख विनष्ट हो गया अर्थात राम नाम की सम्पदा प्राप्त होने पर महाअज्ञानता और महादुःखों का विध्वंस हो जाता है। जैसे ही राम के प्रति अनुराग से हृदय परिपूर्ण हुआ तभी से सर्व–संकट एवं संशय दूर हो गये। मानो जब भगवत्प्रेम की बाढ़ आती है तो वह सारे संकट, भ्रम अपने साथ बहा ले जाती है। राम नाम अविद्या के अंधकार को दूर करने और विपत्तियों का नाश करने का अचूक मन्त्र है।

राम – नाम जो जपे एक बेर,
उस के भीतर कोष – कुबेर ।
दीन – दुखिया – दरिद्र – कंगाल,
राम – राम जप होवे निहाल //87//

यहाँ तक कि जो कोई एक बार भी राम–नाम जपता है, उसके भीतर भी इस नाम की उतनी सम्पत्ति संचित हो जाती है, जितनी देवों के कोषाध्यक्ष कुबेर के कोष में है। राम–राम के जपने से तो बेचारा–दयनीय, निर्धन–निर्बल, दुःखी,

दरिद्री, व्यथित भी निहाल हो जाता है, समद्ध, वैभवशाली एवं भाग्यवान हो जाता है।

हृदय राम – नाम से भरिए,
संचय राम – नाम धन करिए ।
घट में नाम मूर्ति धरिए,
पूजा अन्तर्मुख हो करिए ।।88।।

अतएव अपने हृदय को राम–नाम से परिपूरित कर डालिए, भर लीजिए, और राम–नाम रूपी धन ही एकत्रित करिए, इसी सच्चे धन का संग्रह करें। अपने भीतर राम–नाम रूपी मूर्ति को स्थापित कर लें तथा भीतर की ओर मुड़कर पूजन आराधन करें–अन्तस्थ–अन्तःकरण–हृदय में आसीन प्रभु राम की उपासना करें।

आँखें मूँद के सुनिए सितार,
राम – राम सुम ुर झंकार ।
उस में मन का मेल मिलाओ,
राम – राम सुर में ही समाओ ।।89।।

भीतर बज रही सितार को आँखें बन्द करके राम–राम की मधुर झंकार–गूँज–ध्वनि को सुनिए अर्थात् भीतर बज रही एवं अति मधुर राम–राम गुंजाती–झंकारित हुई, सितार को आँखें बन्द करके सुनिए, उसमें मन को सुस्वर कर लो तथा इस प्रकार राम–राम धुन में, लय में विलुप्त हो जाओ, खो जाओ।

जपूँ मैं राम – राम प्रभु राम,
ध्याऊँ मैं राम – राम हरे राम ।
सिमरूँ मैं राम – राम प्रभु राम,
गाऊँ मैं राम – राम श्री राम ।।90।।

हे राम! मैं सदा राम–राम ही जपूँ। हे प्रभु! मैं सदैव राम–राम पर ही ध्यान लगाऊँ। हे हरि! हे स्वामी! मैं सदा–सदा राम–राम ही सिमरूँ तथा सदैव राम–राम श्री राम ही गाऊँ।

अमृतवाणी का नित्य गाना,
राम – राम मन बीच रमाना ।
देता संकट – विपद् निवार,

करता शुभ श्री मंगलाचार //91//

इस दिव्य, अमर करने वाली वाणी का नित्य कीर्तन एवं संकीर्तन करने का अभिप्राय है; अपने मन–मन्दिर में राम–राम को प्रतिष्ठित करना। नित्य पाठ दुःख, विपत्ति को रोकता है, अवरूद्ध करता है तथा सौभाग्य, वैभव, ऐश्वर्य प्रदाता है, सुख–दाता है, मांगलिक है, शुभारम्भ है।

राम – नाम जप–पाठ से,
हो अमृत संचार /
राम–धाम में प्रीति हो,
सुगुण–गण का विस्तार //92//

राम–नाम के जाप एवं संकीर्तन–गुणगान से **अमृत** का, (माधुर्य का) संचार होता है अर्थात् यह मधुरता को उदित एवं व्याप्त करता है। इससे राम एवं उसके निवास–स्थान से प्रेम हो जाता है और सद्गुणों के समूह का विस्तार होता है, अच्छे–अच्छे दिव्य–गुणों में वद्धि होती है।

तारक – मंत्र राम है,
जिस का सुफल अपार /
इस मंत्र के जाप से,
निश्चय बने निस्तार //93//

राम तारने वाला मंत्र है, उद्धार करने वाला, विमोचन करने वाला है, जो असंख्य लाभ, सुख–भोग, सफलता, सिद्धि प्रदान करके आनन्द का उपभोग करवाने वाला है। इस मंत्र के जपने से मुक्ति (मोक्ष) प्राप्ति, निर्वाण, राम–धाम की प्राप्ति, भगवद्साक्षात्कार, परम पद की प्राप्ति, आत्मा–परमात्मा का मिलन–ऐक्य, एकरूपता–लाभ प्राप्त हो के रहेगा, ऐसा **सुदृढ़** पूर्ण निश्चय रखिए।

इति

धुन

अमृतवाणी

1 *बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम राम राम ।*

2 *श्री राम, श्री राम, श्री राम राम राम ।*

3 *जय जय राम, जय जय राम, जय जय राम राम राम ।*

4 *जय राम जय राम, जय जय राम,*
राम राम राम राम, जय जय राम ।

5 *पतित पावन नाम, भज ले राम राम राम ।*
भज ले राम राम राम, भज ले राम राम राम ।।

6 *अशरण शरण शान्ति के धाम, मुझे भरोसा तेरा राम ।*
मुझे भरोसा तेरा राम, मुझे भरोसा तेरा राम ।।

7 *रामाय नमः श्री रामाय नमः,*
रामाय नमः श्री रामाय नमः ।

8 *अहं भजामि रामं, सत्यं शिवं मंगलम् ।*
सत्यं शिवं मंगलम्, सत्यं शिवं मंगलम् ।।

वृद्धि–आस्तिक भाव की, शुभ मंगल संचार ।
अभ्युदय सद्धर्म का, रामनाम विस्तार।। (2)

: परमेश्वर श्री राम से निष्काम प्रार्थना :

विश्व में ईश्वर के प्रति आस्था एवं ईश्वरीय ज्ञान के प्रति श्रद्धा-विश्वास बढ़े, विश्व भर में शुभ एवं मंगल व्याप्त हो। सच्चे धर्म का उदय हो तथा राम-नाम का विस्तार (फैलाव) हो।

ग्रन्थ सूची

भक्ति प्रकाश
वाल्मीकीय रामायणसार
श्रीमद्भगवद्गीता
एकादशोपनिषद् संग्रह
प्रवचन पीयूष
प्रार्थना और उसका प्रभाव
उपासक का आन्तरिक जीवन
भक्ति और भक्त के लक्षण
स्थितप्रज्ञ के लक्षण
भजन एवं ध्वनि संग्रह
अमृतवाणी
अमृतवाणी व्याख्या
(हिन्दी, अंग्रेज़ी, कन्नड, मलयालम, तेलुगू, तामिल)
सुन्दरकाण्ड

प्राप्ति स्थान :
श्रीरामशरणम्, 8 ए, रिंग रोड, लाजपत नगर–4
नई दिल्ली–110024

WEB SITE- WWW.SHREERAMSHARNAM.ORG
E-mail: shreeramsharnam@hotmail.com